चौबीस तीर्थंकर: विश्व धर्मों में एक सार्वभौमिक गूंज

यहूदी रहस्यवाद, ईसाई दर्शन और प्राचीन इतिहास में जैन ब्रह्मांड विज्ञान के छिपे हुए सूत्र।

एक प्राचीन रहस्योद्घाटन: शिव के रूप में नेमिनाथ

शिव का (सच्चा) रूप, यहाँ तक कि वह दिगंबर (वस्त्रहीन) रूप भी...
भगवान के उस रूप का स्मरण करते हुए, जो पद्मासन में विराजमान हैं और
जो स्वयं शांति के प्रतीक हैं... उस यमन ने नेमिनाथ को शिव नाम दिया!

— स्कंद पुराण (हिन्दू): प्रभास खंड, xvi. 94-96.

रहस्यमयी संख्या ‘२४’ का वैश्विक पदचिह्न

हिन्दू धर्म:
भगवान विष्णु के २४ प्रिय अवतार।

प्राचीन बेबीलोन:
ब्रह्मांड का मार्गदर्शन करने वाले २४ सलाहकार देवता।

बौद्ध धर्म:
२४ पूर्व बुद्ध (उपदेशक देवता)।

पारसी धर्म (Zoroastrianism):
२४ अहुरा—‘आशीर्वाद की इच्छा और प्रभुत्व को आगे बढ़ाने वाले सबसे शक्तिशाली’ (यस्ना, li. 20)।

यहूदी अपोक्रिफा: ‘जैकब की सीढ़ी’ का रहस्य

"वह सीढ़ी जो तुमने देखी जिसके बारह कदम थे... और चौबीस चेहरे इस युग के अधर्मी (lawless) गैर-यहूदियों (heathens) के राजा हैं।"

— ओल्ड टेस्टामेंट का लॉस्ट अपोक्रिफा

यह रहस्यमयी भाषा क्या छिपा रही है?
क्या ये ‘चौबीस राजा’ कोई और हैं?

रूपक का डिकोडिंग: सत्य की कुंजी

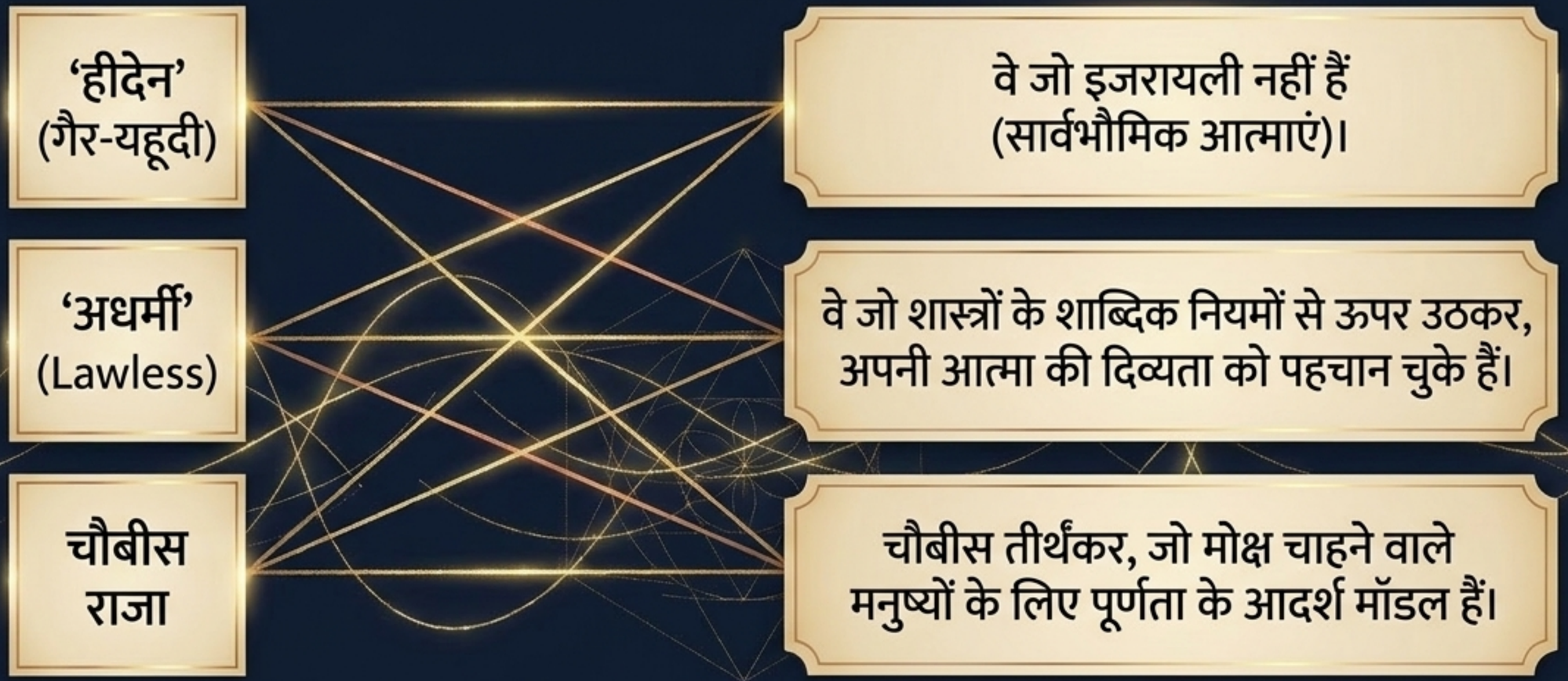

रूपक शैलियों ने हमें सत्य से दूर कर दिया है; डिकोड होने पर, मतभेद समाप्त हो जाते हैं।

ईसाई 'एपोकैलिप्स': एक रहस्यमयी दीक्षा कक्ष

'बुक ऑफ रेवलैशन' का दृश्य विशुद्ध रूप से जैन धर्म जैसा है। यह एक रूपक शैली में आत्मा की दीक्षा का चित्रण है।

- **केंद्र:** एक दिव्य सिंहासन।
- **आवरण:** २४ सिंहासनों पर श्वेत वस्त्र पहने और सोने के मुकुट धारण किए २४ बुजुर्ग।
- **दीक्षार्थी:** एक मेमना (The Lamb)।
- **संरक्षक:** ४ विशिष्ट जीव, प्रत्येक के ६ पंख और असंख्य आँखें।

रहस्योद्घाटन: सिंहासन और तीर्थंकर

२४ तीर्थंकर - जिन्होंने देवत्व का मुकुट प्राप्त किया है।

दिव्य 'जीवन' (जीव / Jiva) - परम शुद्ध आत्मा का प्रतीक।

परम विनम्रता से युक्त आत्मा - जो मोक्ष के लिए दीक्षा ग्रहण कर रही है।

ब्रह्मांड विज्ञान का डिकोडिंग: पदार्थ और समय

६ पंख
= काल-चक्र के एक अर्ध-हिस्से (उत्सर्पिणी/अवर्पिणी) के ६ 'आरे' (काल खंड)।

'जीव' दिव्य है, और भौतिक शरीर (४ तत्व) में इसका प्रकटीकरण के एक अर्ध-चक्र (६ आरे) में आने वाले २४ तीर्थंकरों द्वारा निर्देशित होता है।

प्रारंभिक ईसाई धर्म की पुष्टि

वह जिसने सबसे पहले अपनी वासनाओं को शांत किया है और खुद को तटस्थता (वीतरागता) के लिए प्रशिक्षित किया है... यद्यपि यहाँ पृथ्वी पर उसे सम्मानित न किया गया हो, वह चौबीस सिंहासनों पर बैठेगा, जैसा कि जॉन एपोकैलिप्स में कहते हैं।

— अलेक्जेंड्रिया के क्लेमेंट
(सेंट पीटर के सीधे शिष्य)

ये सिंहासन उन महानतम शिक्षकों (तीर्थकरों) के लिए हैं, जिन्होंने दिव्य पूर्णता प्राप्त की है।

मार्गदर्शक बनाम मुक्त आत्माएं: तीर्थंकर और सिद्ध

	तीर्थंकर	सिद्ध
संख्या	केवल २४ प्रति अर्ध-चक्र	अनंत
ज्ञान	सर्वज्ञ / केवलज्ञानी	सर्वज्ञ / केवलज्ञानी
गुण	अष्ट-गुणों से संपन्न	अष्ट-गुणों से संपन्न
मुख्य भूमिका	परम सत्य का उपदेश देना	मौन, पूर्ण मुक्ति
वैभव	बाह्य वैभव और समवशरण से घिरे हुए	बिना किसी भौतिक आवरण के

पश्चिम में ‘सिद्धों’ की अनंत भीड़ (II एस्ड्रास)

मैंने सिय्योन पर्वत पर एक बहुत बड़ी
भीड़ देखी जिसे मैं गिन नहीं सकता था...
वे वे हैं जिन्होंने नश्वर वस्त्र (शरीर) उतार
दिए हैं, और अमरता धारण कर ली है...
आदर्श का अनुसरण करके आत्माएं
देवत्व का मुकुट प्राप्त करती हैं।

यह यहूदी रहस्यवाद उन अनंत आत्माओं का वर्णन कर
रहा है जिन्होंने स्वयं को कर्मों के बंधन से मुक्त कर लिया
िया है — ठीक जैन धर्म के सिद्धों की तरह।

सिद्धत्व (Nirvana) की शारीरिक रचना: एक अद्भुत समानता

ईसाई धर्मग्रंथ
(Christian Texts)

"वे अब कभी भूखे नहीं होंगे, न ही प्यासे होंगे..." (रेवलैशन 7:16)

"वहाँ न तो मृत्यु होगी, न दुःख... न दर्द होगा।" (रेवलैशन 21:4)

"वह अविनाशी प्रकृति सोती नहीं... उसे पसीना नहीं आता, न रक्त टपकता है।" (A.N.C. lib)

जैन सिद्ध अवधारणा
(Jain Concept of Siddha)

जीव पुद्गल (पदार्थ) से पूरी तरह मुक्त हो जाता है।

कोई जन्म नहीं, कोई मृत्यु नहीं (अविनाशी)।

भूख, प्यास, निद्रा और शारीरिक कष्टों से परे शुद्ध चेतन अवस्था।

'शाखा' होने का भ्रम (The Myth of the Offshoot)

जैन धर्म बौद्ध धर्म की एक शाखा है और केवल महावीर के समय शुरू हुआ।

आज, ऐतिहासिक और पुरातात्विक साक्ष्य स्पष्ट रूप से साबित करते हैं कि पूर्व के तीर्थंकर (जैसे पार्श्वनाथ और ऋषभदेव) केवल कल्पना नहीं, बल्कि निर्विवाद ऐतिहासिक सत्य हैं। २४ की यह संख्या प्रतिद्वंद्वी धर्मों के ग्रंथों द्वारा भी पुष्ट होती है।

हिन्दू महाकाव्यों में जैन धर्म की स्वीकृति

हिन्दू धर्मग्रंथ ऋषभदेव (प्रथम तीर्थंकर) को सृष्टि की शुरुआत में स्वीकार करते हैं, उन्हें अवतारों में स्थान देते हैं, और उन्हीं के पुत्र सम्राट भरत के नाम पर इस भूमि का नाम 'भारतवर्ष' पड़ा।

'योग वशिष्ठ' (15.8) में स्वयं भगवान राम कहते हैं:
"नाहं रामो न मे वांछा...
शान्तमास्थातुमिच्छामि
स्वात्मनीव जिनो यथा॥'
(मैं सांसारिक इच्छाओं से मुक्त होकर अपने भीतर वैसी ही परम शांति चाहता हूँ जैसी 'जिन' ने प्राप्त की है।)

वेदों में तीर्थकरों के स्पष्ट प्रमाण

ऋग्वेद / यजुर्वेद:

ऋग्वेद (X.12.168) में प्रथम तीर्थकर ऋषभदेव का नाम से उल्लेख है। २२वें तीर्थकर अरिष्टनेमि (नेमिनाथ) का भी स्पष्ट वर्णन मिलता है।

श्रमण और अर्हन्:

ऋग्वेद उन 'श्रमणों' और 'अर्हन्' का उल्लेख करता है जो कर्मकांडीय यज्ञों का विरोध करते थे।

अथर्ववेद का महाव्रात्य:

अथर्ववेद (भाग १५) में एक 'महाव्रात्य' का उल्लेख है जो एक वर्ष तक निरंतर एक ही ध्यान मुद्रा (कायोत्सर्ग) में खड़े रहे — यह प्रथम तीर्थकर ऋषभदेव के जीवन का सटीक वर्णन है।

पुरातात्विक सत्य: पत्थर पर उकेरा गया इतिहास

उड़ीसा की खंडगिरि पहाड़ी में प्राप्त प्राचीन शिलालेख इस बात का अकाट्य प्रमाण है।

यह शिलालेख प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव की एक प्रतिष्ठित मूर्ति का उल्लेख करता है, जिसे राजा नंदवर्धन लगभग २४०० वर्ष पूर्व अपने साथ ले गए थे, और जिसे दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में सम्राट खारवेल द्वारा वापस कलिंग लाया गया। यह मूर्ति महावीर और संभवतः पार्श्वनाथ के समय से भी पुरानी थी।

एक अत्यंत प्राचीन, दार्शनिक व्यवस्था

“पूरा ऊपरी, पश्चिमी और उत्तर-मध्य भारत...
आर्यों के गंगा या सरस्वती तक पहुँचने से बहुत पहले,
एक प्राचीन और अत्यधिक संगठित धार्मिक व्यवस्था
के प्रभाव में था, जो दार्शनिक, नैतिक और अत्यंत तपस्व
तपस्वी थी, यानी जैन धर्म। जैनियों को उनके बाईस
प्रमुख संतों (तीर्थंकरों) द्वारा बहुत पहले ही शिक्षित
किया जा चुका था...”

— **मेजर जे.जी.आर. फरलॉन्ग** (प्रसिद्ध विद्वान और इतिहासकार)

निष्कर्ष: सत्य का एक ही स्वरूप है

बाह्य रूप से भिन्न दिखने के बावजूद, विश्व के सभी महान धर्मों के रूपक अंततः एक ही सत्य की ओर इशारा करते हैं। ये २४ विश्व-शिक्षक पूजा चाहने वाले देवता नहीं हैं, बल्कि मार्गदर्शक हैं जो हमें याद दिलाते हैं कि सांसारिक बंधनों का त्याग करके, प्रत्येक जीव उस अनंत, अमर और परम मुक्त अवस्था (सिद्धत्व) को प्राप्त कर सकता है। मतभेद केवल भाषा के हैं; सत्य शाश्वत है।